



Atal Bhujal Yojana Haryana

5th Event Training



सिंचाई एवं जल संसाधन विभाग
हरियाणा



THE WORLD BANK



**INTECCO
TECHNICAL**
SERVICES PVT. LTD.



ड्रिप सिंचाई प्रणाली से गन्ना उत्पादन

- गन्ने में ड्रिप सिंचाई प्रणाली की जरूरत होती है।
- इस प्रणाली के माध्यम से हम गन्ने के लिए पानी की खपत को कम कर सकते हैं और उत्पादन को बढ़ा सकते हैं।
- इसके साथ ही, यह प्रणाली गन्ने की खेती में काम को सुगम बनाने में मदद करती है। जब फसल काटने का समय आता है, तो यह ड्रिप लेटरल नुकसान से बचाने में मददगार होती है।

ड्रिप सिंचाई प्रणाली से गन्ना उत्पादन

- गन्ने की उम्र और जड़ों की वृद्धि
- भूमि के उपरी भाग से होने वाले जल के बाष्पीकरण
- पत्तियों द्वारा होने वाले उत्सर्जन
- जमीन की गहराई और जलधारण क्षमता
- फसल की जड़ों के पास या सानिध्य में बुंद-बुंद पानी और जरूरत के हिसाब से अन्नद्रव्य देने की पद्धति
- शक्कर कारखानों के माध्यम से और केंद्र और राज्य शासन की आर्थिक सहायता से टपक सिंचाई पद्धति का उपयोग हो रहा है.

ड्रिप सिंचाई प्रणाली से गन्ना उत्पादन में लाभ:

उत्पादन में वृद्धि:

- टपक सिंचाई के द्वारा गन्ने के जड़ों की कक्षा में नमी, खाद, और हवा का उचित संतुलन बनाए रखा जा सकता है।
- इससे गन्ने का उत्पादन 35% से 40% तक वृद्धि होती है।
- टपक सिंचाई में पौधों की संख्या अधिक होती है और सभी

ड्रिप सिंचाई प्रणाली से गन्ना उत्पादन में लाभ:

पानी की बचत:

- टपक सिंचाई प्रणाली में गन्ने की अवस्था के संभव है।
- विभिन्न सिंचाई अवस्थाओं में जल की आवश्यकता और पानी का उपयोग विभिन्न होता है।
- टपक सिंचाई में, गन्ने को उसकी आवश्यकतानुसार ही पानी दिया जाता है, जिससे 45% से 50% तक पानी की बचत होती है।

ड्रिप सिंचाई प्रणाली से गन्ना उत्पादन में लाभ:

टपक सिंचाई में पानी उपयोग क्षमता:

- टपक सिंचाई में पानी की उपयोग क्षमता 90% तक होती है।
- पारंपरिक सिंचाई प्रणाली में यह क्षमता केवल 40% तक होती है।

ड्रिप सिंचाई प्रणाली से गन्ना उत्पादन में लाभ:

- गन्ने को आवश्यकतानुसार ही पानी दिया जाना चाहिए।
- यह भूमि की उपजाऊ क्षमता को बनाए रखने में मदद करता है।
- टपक सिंचाई से भूमि दलदली और क्षारीय नहीं होती।
- जल में घुलनशील या द्रवरूप उर्वरकों की मात्रा में 30% बचत होती है।
- टपक सिंचाई खरपतवार नियंत्रण के लिए बहुत सहायक होती है।
- इससे खरपतवार की उगाई कम होती है और नींदाई औषधि के खर्च में बचत होती है।
- टपक सिंचाई के लिए भूमि समतलीकरण की आवश्यकता नहीं होती।
- यह पध्दति पादप रोगों के फैलने की संभावना को कम करती है।

पारंपरिक सिंचाई से होने वाले नुकसान :

- पानी का जरूरत से ज्यादा उपयोग
- जमीन दलदली व क्षारीय होती जाती है
- खरपतवार में वृद्धि
- खरपतवार की अधिकता के कारण गन्ने की पैदावार पर विपरीत प्रभाव पड़ता है
- भूमि का दोहन

पारंपरिक सिंचाई से होने वाले नुकसान :

- **खाद व उर्वरक का अनावश्यक इस्तेमाल:** पानी के संचयन की वजह से खाद व उर्वरक का बड़ा हिस्सा व्यर्थ जाता है।
- **गन्ने की पैदावर का कम होना:** पानी के अधिकता के कारण गन्ने की पैदावर में कमी होती है।
- **पुरानी जमीन पर असर:** पारंपरिक सिंचाई प्रणाली में पानी की अधिकता के कारण जमीन नरम होती है और उत्पादन में कमी होती है।

धान और गेहूं फसल प्रणाली में लेजर लैंड लेवलिंग

- लेजर लैंड लेवलिंग (LLL) भूमि की सतह को लेजर-सुसज्जित ड्रैग बकेट का उपयोग करके समतल बनाने की प्रक्रिया है।
- इस अभ्यास में, बड़े हॉर्सपावर वाले ट्रैक्टर और मिट्टी उठाने वाली मशीनें उपयोग की जाती हैं, जो ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम (GPS) और/या लेजर-निर्देशित साधनों से सुसज्जित होती है।

■ इससे मिट्टी को काटकर या भरकर इच्छित स्तर/ढाल बनाई

धान और गेहूं फसल प्रणाली में लेजर लैंड लेवलिंग

- लेजर लैंड लेवलिंग (LLL) भूमि की सतह को लेजर-सुसज्जित ड्रैग बकेट का उपयोग करके समतल बनाने की प्रक्रिया है।
- इस अभ्यास में, बड़े हॉर्सपावर वाले ट्रैक्टर और मिट्टी उठाने वाली मशीनें उपयोग की जाती हैं, जो ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम (GPS) और/या लेजर-निर्देशित साधनों से सुसज्जित होती हैं।
- इससे मिट्टी को काटकर या भरकर इच्छित स्तर/ढाल बनाई जा सकती है।
- इसे खेती, फसल स्थापना, उर्वरक और खाद प्रबंधन, और विशेष रूप से जल प्रबंधन से संबंधित सभी प्रबंधन अभ्यासों के साथ मिलाकर पूरा किया जाता

लेज़र लैंड लेवलिंग के लाभ:

- जल उपयोग और खरपतवार नियंत्रण में कुशलता।
- उर्वरक उपयोग की कुशलता।
- मिट्टी के प्रकार और फसल प्रणाली के आधार पर कृषि उत्पादकता ~5-20%
- राइस-गेहूं प्रणाली में हर हेक्टेयर पर 10-25 हजार का अधिक लाभ।
- ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन
- नमक प्रभावित मिट्टी में बहुत अच्छा विकास।
- राइस-गेहूं कृषि में सिंचाई पानी 20-30% कम लगता है।

लेजर लैंड लेवलिंग के लाभ:

सिंचाई अवधि:

- गेहूं मौसम में 10-12 घंटे।
- चावल मौसम में 47-69 घंटे।

लेजर लैंड लेवेलिंग पर वीडियो:

<https://youtu.be/rn31utk8GvA>

<https://youtu.be/OXqPNo1iDio>

<https://youtu.be/T8krtBecokU>

जल संरक्षण में व्यवहार परिवर्तन तकनीकें और संचार

- बारिश के पानी का संग्रह करें: छत, टैंक, तालाब या अन्य संग्रहण साधनों का उपयोग करके बारिश के पानी को संग्रहित करें। इससे जल की बचत होगी और पानी की उपयोगिता में वृद्धि होगी।
- स्नान के समय पानी की बचत करें: नहाने के समय निर्धारित समय तक नहाने का प्रयास करें और बाल्टी में पानी का उपयोग करें।

कृषि में संयंत्रों का उपयोग करें स्प्रिंकलिंग और ड्रिप सिंचाई।

जल संरक्षण में व्यवहार परिवर्तन पर फ़िल्म प्रदर्शन

<https://youtu.be/3RMRC-qqldM>

<https://youtu.be/1eekFS6iU4M>

<https://youtu.be/CDqtY-nuJpg>

<https://youtu.be/ryJ0WwvPS7M>

जल संरक्षण में व्यवहार परिवर्तन तकनीकें और संचार

- जल के प्रति संवेदनशील बनें।
- पृथ्वी पर जीवन को बनाए रखने के लिए सभी जीवित प्राणियों के लिए पानी महत्वपूर्ण है।



जहां से जल की बर्बादी शुरू होती है,
जल संकट की शुरुआत वहीं से होती है,



जल बर्बादी से बचें, जल संरक्षण की राह चुनें

जल संरक्षण हेतु नारे :

- "अगर आज जल ना बचाओगे, तो आने वाला कल देख ना पाओगे।"
- "जल को ना करो बेकार, जल बिना मच जायेगा हाहाकार।"
- "जल त्रासदी के कई हैं कारण, जल संरक्षण करके करो इनका निवारण।"
- "पानी अगर ना बचाओंगे, खुद प्यासे रह जाओंगे!"
- "बिन जल जीवन नहीं रहेगा, जल की अद्भुत महिमा तुम जानो, आज अभी से जल संरक्षण, करने की बस तुम ठानो।"

कृषि की आधुनिक तकनीक और सब्सिडी का लाभ

एमआई के लिए ऑनलाइन आवेदन भरने के लिए एसओपी

वेबसाइट www.cadaharyana.nic.in पर जाएं। "एमआई के लिए किसान ऑनलाइन आवेदन" पर क्लिक करें

- मोबाइल नंबर पर ओटीपी भेजा जायेगा। यूजरनेम और पासवर्ड के रूप में मोबाइल नंबर का उपयोग करके लॉगिन करें।
-
- अपनी आवश्यकता के अनुसार योजना और उप-श्रेणी का चयन करें।
- योजना का चयन करने के बाद निम्नलिखित जानकारी भरें।
-
- परिवार पंजीकरण सहित व्यक्तिगत जानकारी। भूमि विवरण (फैराड) की प्रति अपलोड करें।
-
- बैंक विवरण (बैंक पासबुक की कॉपी अपलोड करें)
-
- चुनी गई योजना के अनुसार एमआई परियोजना के घटकों के बारे में विवरण दें। पानी का स्रोत बताओ।
-
- जल मार्ग की आवश्यकता के मामले में, नहर का नाम और आउटलेट संख्या चुनें। प्राथमिकता के लिए अंक प्राप्त करने के लिए विवरण दें।
-

ग्राम पंचायत स्तर पर लगाए जा रहे सन बोर्ड

ग्राम पंचायत स्तर पर लगाए जा रहे सन बोर्ड के संबंध में चर्चा :

- जिले का गिरता भूजल स्तर।
- जिले वार्षिक वर्षा विवरण।
- ग्राम में मौजूदा जल की गुणवत्ता।

वार्षिक वर्षा डेटा

- डीएलआई#1 के तहत डेटा डिस्प्ले।
(ग्राम पंचायत विशेष का डेटा प्रस्तुत किया जाएगा)

ग्राम पंचायत स्तर पर लगाए जा रहे सन बोर्ड पर चर्चा

- भूमिगत जल स्तर में खतरनाक गिरावट ।
- घट रहा है भूजल स्तर,
विशेषज्ञ-नहीं हुए सतर्क तो बूंद-बूंद के लिए तरसंगे लोग।
- पिछले एक दशक में लगभग दोगुना भूजल का स्तर घटा है।
- भूमिगत जल को रिचार्ज करने के लिए गंभीरता से

जल की गुणवत्ता

- **भौतिक गुणवत्ता** : जल पूर्णतया रंगहीन, गंधहीन, स्वादयुक्त एवं शीतल होना चाहिये।
- **रासायनिक गुणवत्ता** : जल में घुलनशील ऑक्सीजन, पीएच मान तथा खनिजों की मात्रा स्वीकृत सीमा में होनी चाहिये।
- **जैविक गुणवत्ता** : जल जनित रोगकारक अशुद्धियों से पूर्णतया मुक्त होना चाहिये।

घट रहे भूजल स्तर के समाधान के उपाय

- जल को संरक्षित रखने के लिए, देश के सभी निवासियों को इसके महत्व को समझना चाहिए।
- जल का पुनर्नवीनीकरण(री-यूज़) और उपयोग करना चाहिए जहां भी संभव हो।


घट रहे भूजल स्तर के समाधान के उपाय

- औद्योगिक समूहों को सामान्य प्रवाह उपचार संयंत्रों (ट्रीटमेंट प्लांट) की स्थापना करनी चाहिए।
- मृदा परीक्षण करके उर्वरकों का सही मात्रा में उपयोग करना चाहिए।
- निष्पादित प्रदूषणकारी औद्योगिक इकाइयों के लाइसेंसों को रद्द करना चाहिए।

घट रहे भूजल स्तर के समाधान के उपाय

- औद्योगिक समूहों को सामान्य प्रवाह उपचार संयंत्रों (ट्रीटमेंट प्लांट) की स्थापना करनी चाहिए।
- मृदा परीक्षण करके उर्वरकों का सही मात्रा में उपयोग करना चाहिए।
- निष्पादित प्रदूषणकारी औद्योगिक इकाइयों के लाइसेंसों को रद्द करना चाहिए।


ग्राम पंचायत स्तर पर लगाए जाने वाले होर्डिंग्स




सावधान !

आपकी ग्राम पंचायत में अगले 25 वर्षों में भूजल की स्थिति अति गंभीर एवं गुणवत्ता दयनीय स्थिति में हो जाएगी !

ग्राम पंचायत : अकालगढ़, ब्लॉक : जगाधारी, जिला : यमुनानगर



श्री नरेंद्र मोदी




श्री मनोहर लाल

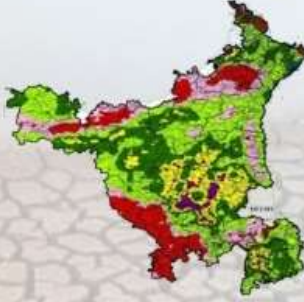
लेजेंड

- 0.0-1.5 (गंभीर रूप से जल भरव)
- 1.51-3.0 (संभावित जल भरव)
- 3.01-5.0 (जल जमाव के लिए बरफ खोम)
- 5.01-10.0 (भूजल की अच्छी संभावना)
- 10.01-20.0 (संभावित भूजल संकट)
- 20.01-30.0 (मध्यम भूजल संकट)
- 30.01 मीटर और अधिक (गंभीर रूप से भूजल संकट)

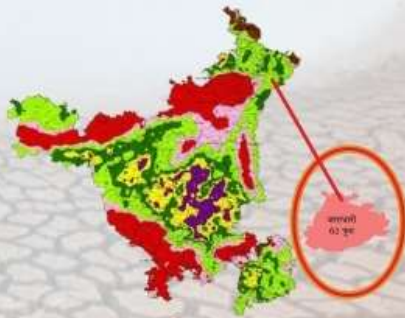
*एम.बी.जी.एल. वर्गीकृत स्तर से नीचे गीटर में खोस : हरियाणा जल संवर्धन प्राधिकरण (HWRA)



वर्ष : 2000



वर्ष : 2010



वर्ष : 2020

भूजल उपयोग (वर्तमान)

++कुल उपयोग पानी	512.1 एकड़ फुट
++उपयोग किया गया पानी	1619.3 एकड़ फुट
++उपलब्धता से अधिक पानी उपयोग किया गया	-1107.1 एकड़ फुट
*वर्तमान भूजल स्तर (2023)	11.6 फुट
पानी की गुणवत्ता	पानी पीने एवं सिंचाई के लिए उपयुक्त नहीं है। पानी में फ्लोराइड भारतीय मानकों से अधिक है।
भू - जल उपयोग के संबंध में ग्राम पंचायत की श्रेणी	अत्यधिक दोहित
ज्यादा मात्रा में भूजल की खपत करने वाली प्रमुख फसलें	धान, गन्ना, गेहूँ

अटल भूजल योजना के अन्तर्गत गतिविधियां

- समुदाय स्तर जागरूकता
- वर्षा मापन यन्त्र
- जल परीक्षण किट
- जल स्तर संकेतक
- सूक्ष्म सिंचाई विधि
- जल पुनर्भरण निर्माण

भूजल प्रयोग (प्रस्तावित)


- धान एवं गन्ने की फसल को कम से कम लगाए।
- धान की सीधी बिजाई के साथ साथ भूमियत त्रिप सिंचाई प्रणाली की अपनावे।
- धान में डी०एस०आर० का प्रयोग करना (20 से 30 प्रतिशत पानी की बचत)
- गन्ने में त्रिप सिंचाई प्रणाली की अपनावे।
- सूक्ष्म सिंचाई विधि को अपनावे (30 से 40 प्रतिशत पानी की बचत)

सुझाव

- फसल विविधीकरण को अपनावे
- कम पानी की खपत वाली फसलें जैसे बाजरा, जवार, सब्जियां एवं फलदार वृक्ष लगाये।
- गेहूँ में शून्य जुलाई / ह्यूपी सीडर / सुपर सीडिंग पद्धति के साथ साथ मिमिकलर सिंचाई प्रणाली को अपनावे।
- फसलों, सब्जियों एवं फलदार वृक्ष में सूक्ष्म सिंचाई (मिनी स्पिकलर / त्रिप (टपका)) प्रणाली को अपनावे।
- गेहूँ में शून्य जुलाई (15 से 20 प्रतिशत पानी की बचत)

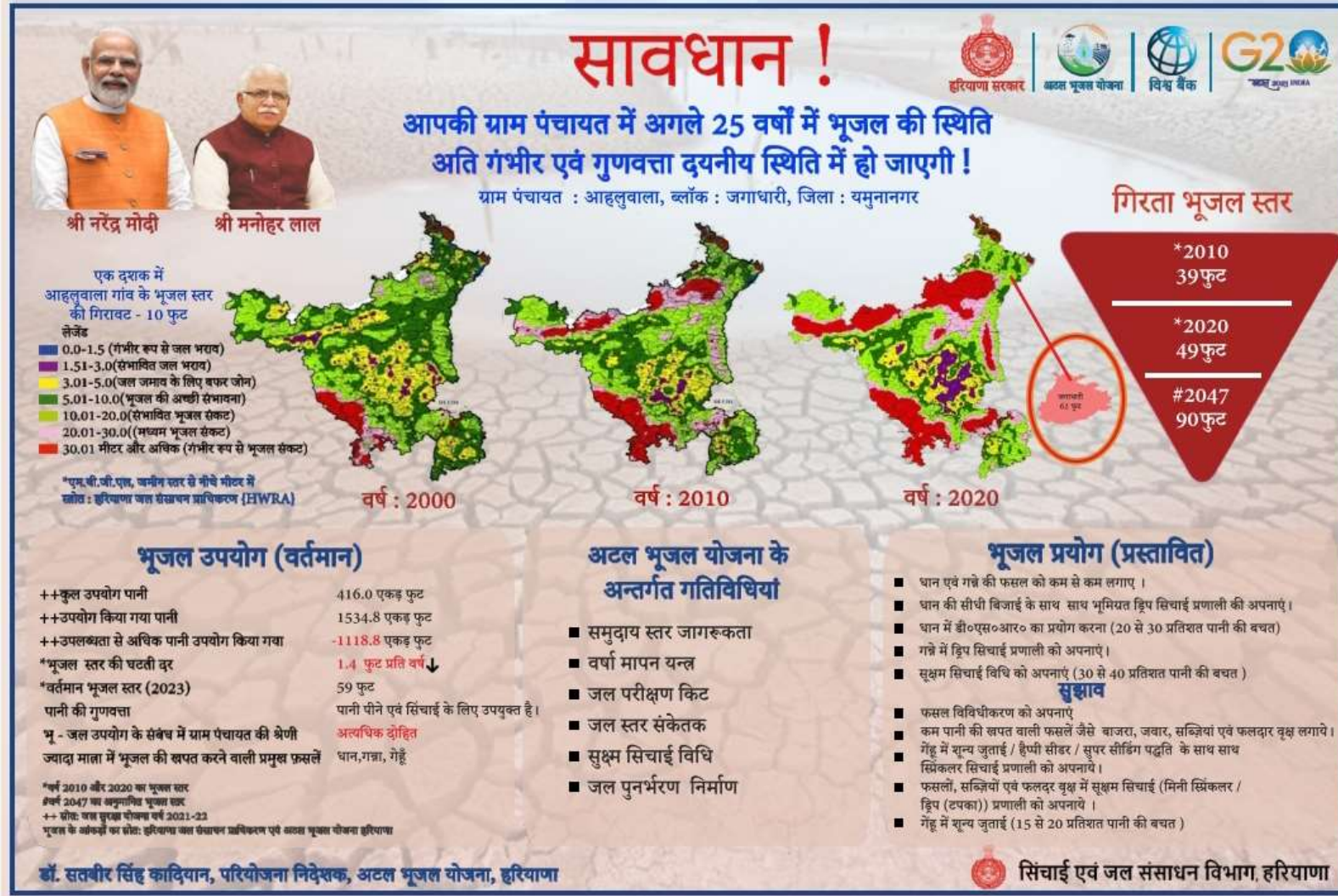
++ श्रोत: अटल भूजल योजना वर्ष 2021-23
पृष्ठ के आंकड़ों का श्रोत: हरियाणा जल संवर्धन प्राधिकरण एवं अटल भूजल योजना हरियाणा

डॉ. सतबीर सिंह कादियान, परियोजना निदेशक, अटल भूजल योजना, हरियाणा



सिंचाई एवं जल संसाधन विभाग, हरियाणा

ग्राम पंचायत स्तर पर लगाए जाने वाले होर्डिंग्स





अटल भूजल योजना

ग्राम पंचायत वाटर प्रोफाइल



अपने भूजल तथ्यों को जानें

राज्य	HARYANA
ज़िला	FARIDABAD

ब्लॉक	BALLABGARH
ग्राम पंचायत	ATALI



1. ग्राम पंचायत का भौगोलिक क्षेत्र (हेक्टेयर)	622.78
2. ग्राम पंचायत की कुल जनसंख्या/पशुधन जनसंख्या	7847 1551
3. ग्राम पंचायत कुल वार्षिक वर्षा (मि.मी.)	352.5
4. मौजूदा जल संरक्षण/पुनर्भरण संरचनाओं की संख्या	6
5. ग्राम पंचायत में कुल फसल क्षेत्र (हेक्टेयर)	548
6. ग्राम पंचायत में कुल सिंचित क्षेत्र (हेक्टेयर)	495
7. सूक्ष्म सिंचाई (ड्रिप/स्प्रिंकलर) के तहत कुल क्षेत्रफल (हेक्टेयर)	1.6 H Sprinkler
8. खरीफ में प्रमुख फसल (हेक्टेयर)	495
9. रबी की प्रमुख फसल (हेक्टेयर)	482
10. ग्राम पंचायत में सिंचाई एवं अन्य उपयोग हेतु कुआँ/नलकूपों/बोरवेलों की संख्या	167
11. पीने के पानी के लिए उपयोग किए जाने वाले हैंडपंपों/कुओं की संख्या	0
12. ग्राम पंचायत में औसत भूजल स्तर (मीटर, जमीनी स्तर से नीचे)।	23.62
13. भूगर्भ जल विकास श्रेणी: (अतिदोहिता/संकटमय/अर्द्ध संकटमय/सुरक्षित श्रेणी)	Semi critical
14. जल बजट के अनुसार ग्राम पंचायत जल (अधिशेष/घाटा)	Negative
15. भूजल सामान्यतः पीने योग्य है (हाँ/नहीं)।	Yes
16. पीने के लिए रासायनिक पैरामीटर अनुमेय सीमा से अधिक बताया गया है। (Iron/Nitrate/Fluoride)	No
17. अटल भूजल योजना के तहत तैयार जल सुरक्षा योजना में प्रस्तावित उपाय (प्रपोज़्ड इंटरवेंशन्स)	30
1. जल संरक्षण/भूजल पुनर्भरण संरचना की संख्या	4
2. सूक्ष्म सिंचाई (ड्रिप/स्प्रिंकलर) के अंतर्गत अतिरिक्त क्षेत्र (हेक्टेयर)	14
3. नवीनतम उपाय	

भूजल संरक्षण के लिए सर्वोत्तम प्रबंधन अभ्यासों को अपनाना

- भूजल संरक्षण के लिए सर्वोत्तम प्रबंधन अभ्यास उच्च जलस्तर की सुरक्षा, जल संग्रहण और जल संरक्षण को सुनिश्चित कर सक



वर्षा जल संचयन, कृत्रिम पुनर्जल संचयन और फसल-जल बजट

- भूजल संरक्षण के लिए सर्वोत्तम प्रबंधन अभ्यास उच्च जलस्तर की सुरक्षा, जल संग्रहण और जल संरक्षण को सुनिश्चित करते हैं।
- वर्षा जल संचयन अभ्यास जल संसाधन की बचत करते हैं और पानी के उपयोग को भविष्य के लिए सुरक्षित बनाते हैं।
- कृत्रिम पुनर्जल संचयन अभ्यास द्वारा खेती के लिए जल का पुनर्निर्माण किया जा सकता है और सूखे में जल की उपलब्धता को बढ़ाया जा सकता है।

वर्षा जल संचयन, कृत्रिम पुनर्जल संचयन और फसल-जल बजट

- फसल-जल बजट अभ्यास द्वारा व्यापक पानी की व्यवस्था करके जल का सही उपयोग किया जा सकता है और पौधों के लिए आवश्यक मात्रा में पानी प्रदान किया जा सकता है।
- इन अभ्यासों को अपनाने से ग्रामीण क्षेत्रों में जल संसाधन का सुरक्षित और टिकाऊ उपयोग हो सकता है और पर्यावरणीय संतुलन बना रह सकता है।



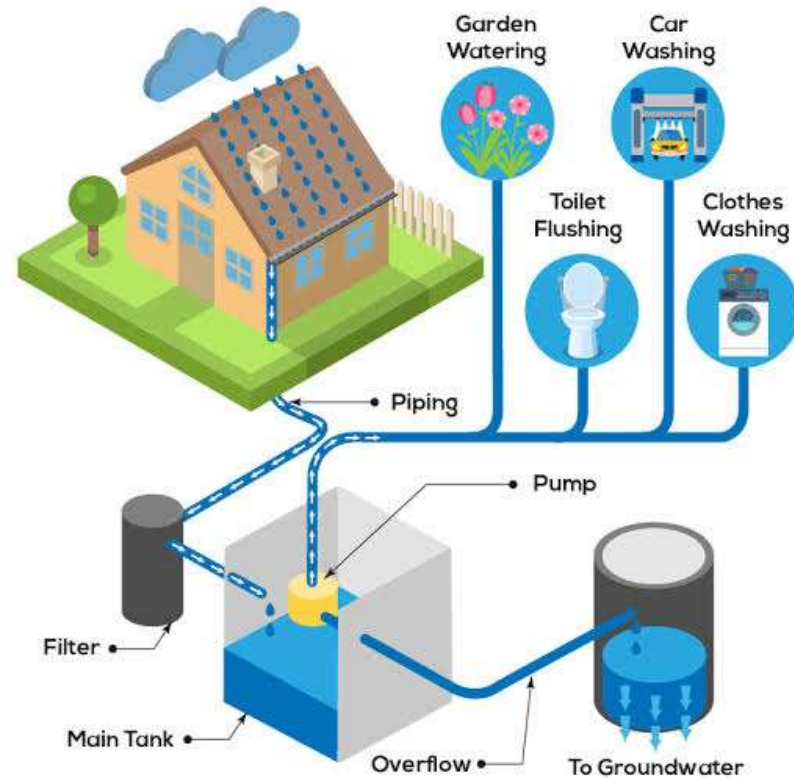
वर्षा जल संचयन : अभिप्राय

वर्षा जल संचयन का अभिप्राय है वर्षा के जल को एकत्र करके कुआँ, तालाबों और गड्ढों आदि को फिर से भरकर पानी की समस्या दूर करना।



घर की छत के वर्षा जल का संचयन कैसे करेंगे?

घर से थोड़ी दूर पर २ से ३ मीटर गहरा गड्ढा खोदकर, गड्ढे को ईट, कंकड़ और बजरी से भर देते हैं। फिर उसके ऊपर मोटी रेत डालते हैं। इस गड्ढे में छत पर गिरने वाले वर्षा के स्वच्छ जल को इकट्ठा करते हैं। विद्यमान बोर वेल में भी फ़िल्टर के माध्यम से जल डाल सकते हैं।



वर्षा जल पुनर्भरण से लाभ :

- आवश्यकतानुसार जल की प्राप्ति,
- जमीन के अन्दर जल मात्रा बढ़ना,
- जल प्रदूषण कम होना,
- जल स्तर नीचे न गिरना,
- मिट्टी का कटाव कम होना व कृषि फसलों को हरा-भरा बनाया जा सकना आदि।



भूजल प्रबंधन के लिए संस्थाओं की मजबूती की आवश्यकता

संस्थागत मजबूती भूजल प्रबंधन के लिए महत्वपूर्ण है।

- एक मजबूत संगठन भूजल संसाधनों को सुरक्षित और सही ढंग से प्रबंधित करने में सक्षम होता है।
- संगठनों की मजबूती से भूजल प्रबंधन के लिए संसाधनों का सुरक्षित उपयोग और उनकी दुरुस्ती बढ़ती है।
- यह संगठनों को उच्च गुणवत्ता वाले भूजल सेवाएं प्रदान करने की क्षमता प्रदान करती है।

भूजल प्रबंधन के लिए संस्थाओं की मजबूती की आवश्यकता

- संस्थागत मजबूती से जल उपलब्धता में सुधार
- बढ़ी हुई आयोजनाओं के लाभ
- सतत भूजल संसाधनों के सकारात्मक परिणाम
- भूजल संसाधनों की सुरक्षा में मजबूती
- लंबी अवधि तक उपयोग की संभावना
- जल सुरक्षितता और सार्वभौमिकता के मानकों को पूरा करना
- नई उपयोग पद्धतियों को प्रोत्साहित करना

प्रशिक्षणार्थियों की ग्राम पंचायत में ABY के कार्यान्वयन में सक्रिय भूमिका

प्रशिक्षणार्थियों को उत्साहित करें, एबीवाई के कार्यान्वयन में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए।

- ग्राम पंचायत स्तर पर प्रशिक्षणार्थियों को स्थानीय जनता के साथ संवाद करने का महत्व समझाएं।
- सामुदायिक संगठनों और स्थानीय संगठनों के साथ सहयोग करके प्रशिक्षणार्थियों को बढ़ावा दें
- संगठनात्मक योजनाओं के तहत एबीवाई के संदर्भ में कार्य करने के लिए प्रशिक्षणार्थियों को प्रोत्साहित करें।

भूजल प्रबंधन के लिए संस्थाओं की मजबूती की आवश्यकता

- संगठनों की मजबूती भूजल संसाधनों की सुरक्षा के साथ-साथ उनकी पुनर्जीविता और संग्रहण क्षमता को भी बढ़ाती है।
- मजबूत संगठन भूजल प्रबंधन की नीतियों और प्रक्रियाओं को संगठित और सुगठित बनाने में सहायता करता है।
- यह संगठनों को संगठनात्मक विकास की ओर प्रेरित करती है और उन्हें भूजल प्रबंधन में नवीनतम और उन्नत तकनीकों का उपयोग करने की क्षमता प्रदान करती है।

प्रशिक्षणार्थियों की ग्राम पंचायत में ABY के कार्यान्वयन में सक्रिय भूमिका

- सामुदायिक संगठनों और स्थानीय संसाधनों का सहयोग प्राप्त करने के लिए प्रशिक्षणार्थियों को प्रेरित करें।
- प्रशिक्षणार्थियों को सामुदायिक प्रशासन की महत्वपूर्णता समझाएं और उन्हें संगठनात्मक कार्यों में योगदान करने के लिए प्रेरित करें।

संपर्क जानकारी:

अधिक जानकारी या सहायता के लिए संपर्क विवरण :

IEC एक्सपर्ट : नाम.....मोबाईल नम्बर:.....सिंचाई एवं जल संसाधन विभाग,

.....

GWE एक्सपर्ट: नाम.....मोबाईल नम्बर:.....सिंचाई एवं जल संसाधन विभाग,



Thank
you! 🙏

